01. प्रागैतिहासिक काल (Prehistoric History)

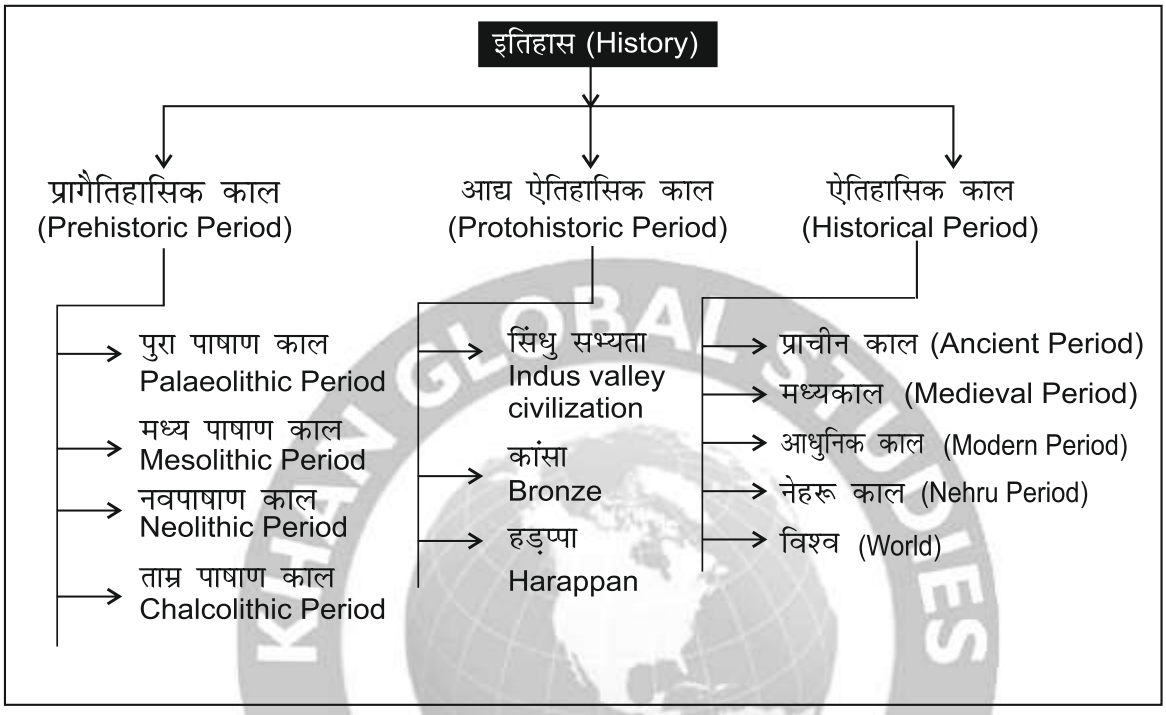

- अतीत का अध्ययन **इतिहास** कहलाता है।
- इतिहास के जनक **हेरोडोटस** को कहते हैं।
- मानवजाति का पालना **अफ्रीका महादेश** को कहते है।
- जबकि सभ्यता का पालना **एशिया महादेश** को कहते है।

➢ **इतिहास को 3 खण्डों में बाँटते हैं–**

1. **प्रागैतिहासिक काल (Prehistoric History)–** इतिहास का वह समय जिसमें मानव लिखना पढ़ना नहीं जानता था। इसकी जानकारी केवल पुरातात्विक साक्ष्य से मिली है। इसके अंतर्गत पाषाण काल को रखते हैं।

पाषाण काल (Stone Age)

- वह समय जब मानव पत्थर के औजार एवं हथियार का उपयोग करता था, पाषाण काल कहलाता है।
- भारत में सर्वप्रथम 1863 ई० में **रार्बट ब्रुस फ्रुट** ने पाषाणकालीन सभ्यता की खोज की।
- भारतीय पुरातत्व का पिता सर **अलेक्जेंडर कनिंघम** है।
- भारत का पुरातात्विक संग्रहालय **इंदिरा गांधी मानव संग्रहालय** (भोपाल) है जो संस्कृति मंत्रालय के अधीन है।
- मिलने वाले धातु के आधार पर नामकरण **क्रिश्चयन थॉमस** ने किया।
- लिखावट के आधार पर नामकरण **जॉन ब्रूस** ने किया।

➢ **पाषाण काल को 4 भागों में बाँटा गया है–**

1. **पुरापाषाण काल (Palaeolithic Period) (20 लाख ई०पू० से 12,000 ई०पू० तक)–**

यह इतिहास का सबसे प्रारम्भिक समय था। इस समय के मानव को आदि मानव कहा जाता है। इस समय का मानव खानाबदोश (खाद्य संग्राहक) अर्थात् उसके जीवन का मुख्य उद्देश्य जानवरों की भाँति ही अपना पेट भरना था। इस समय के मानव की सबसे बड़ी उपलब्धी आग की खोज थी।

- इस समय मानव पत्थर के बड़े-बड़े औजारों का इस्तेमाल शिकार करने के लिए करते थे। इसी समय मानव ने चित्रकारी करना प्रारंभ किया।
- भिमबेटका के गुफाओं में **पुरा पाषाण काल** के चित्र देखने को मिलते हैं। जो मध्यप्रदेश के अब्दुलागंज (रायसेन) में स्थित है।

2. **मध्यपाषाण काल (Mesolithic Period) (12,000 ई०पू० से 10,000 ई०पू० तक)–**

- इस काल के बारे में सर्वप्रथम जानकारी **कार्लेलाइल** ने 1867 ई० में दिया।
- यह पुरापाषाण के बाद का काल था। इस समय मानव के हथियार छोटे आकार के थे, इसलिए इन्हें **माइक्रोलिथ** कहते हैं। इस समय के मानव की सबसे प्रमुख कार्य अंत्योष्टि (अंतिम संस्कार) कार्यक्रम था।
- इसी काल में कश्मीर के बुर्ज होम से मानव के साथ-साथ कुत्ता को भी दफनाने का साक्ष्य मिला है।
- इसी काल में मानव के अस्थिपंजर का सबसे पहला अवशेष प्रतापगढ़ (UP) के **सराय नाहर** तथा **महदहां** नामक स्थान से प्राप्त हुआ।

3. नव या उत्तरपाषाण काल (Neolithic Period) (10,000 ई०पू० से 3000 ई०पू० तक)–

- इस काल के बारे में सर्वप्रथम जानकारी सर जॉन लुबाक ने 1865 ई० में प्रस्तुत किया।
- इस काल में मानव ने स्थायी आवास बना लिया था। साथ ही कृषि तथा पशुपालन भी प्रारम्भ कर दिया। मानव ने इस काल में **पहिया** तथा **मनका (घड़ा)** की खोज की।
- कर्नाटक के मैसूर के पास संगनकल्लू नामक नवपाषाण कालीन पुरास्थल से **राख के टीले** प्राप्त हुए हैं।
- पशुपालन का साक्ष्य भारत में आदमगढ़ (MP) तथा बागौर (राजस्थान) से प्राप्त हुआ है।
- मानव द्वारा पाला गया पहला पशु **'कुत्ता'** था।

Note :–

1. **मेहरगढ़–** यह पाकिस्तान के ब्लूचिस्तान में स्थित है। यहाँ से सर्वप्रथम 7000 ई० पू० सुलेमान और किर्थर पहाड़ियों के बीच कृषि के साक्ष्य जौ एवं गेहूँ मिली थी।
2. **बुर्जहोम–** यह कश्मीर में अवस्थित है। यहाँ गर्तावास का प्रमाण मिला है। यहाँ से मालीक के साथ कुत्ते को दफनाने का साक्ष्य मिला है।
3. **गुफकराल–** यहाँ से मृदभांड का पहला प्रमाण प्राप्त हुआ।
4. **कोल्डिहवा–** यह उत्तरप्रदेश के बेलनघाटी में स्थित है। यहाँ पर चावल का प्राचीनतम साक्ष्य (6000 ई० पू०) मिला है।
5. **चिरांद–** यह बिहार के सारण जिले में स्थित है। यहाँ से प्रचूर मात्रा में हड्डी के उपकरण प्राप्त हुए।
6. **लेहूरादेह–** यहाँ से नवीनतम सबसे प्राचीन चावल का साक्ष्य (9000 ई० पू०-7000 ई० के बीच) प्राप्त हुआ।
7. **दमदमा–** यहाँ एक ही कब्र से तीन मानव कंकाल मिले हैं।

4. ताम्रपाषाण काल (Chalcolithic Period)–

यह पाषाण काल का अंतिम समय था। इस समय तांबे की खोज हुई थी। जिस कारण औद्योगिकरण शुरू हो गया। इसी औद्योगिकीकरण का विकसित रूप सिंधु सभ्यता में देखने को मिलता है।

- ताम्रपाषाण के लोग मुख्यत: ग्रामीण समुदाय बनाकर रहते थे।
- अहार एवं गिलुंद पुरास्थल राजस्थान के बनास घाटी क्षेत्र में फैले हुए ताम्रपाषाण बस्तियाँ है।
- अहार का प्राचीन नाम तांबवती अर्थात् ताँबा वाली जगह है।
- मालावा मृदभांड ताम्रपाषाण युग का सर्वोत्तम मृदाभांड माना गया है।
- बिहार में सेनुवार, सोनपुर और ताराडीह तथा पूर्वी उत्तर प्रदेश में खैराडीह और नरहन ताम्रपाषाण कालीन है।
- महिष दल पश्चिम बंगाल के ताम्रपाषाण बस्तियाँ हैं।
- नवदाटोली मध्यप्रदेश का एक महत्वपूर्ण ताम्रपाषाणिक पुरास्थल है जिसकी उत्खनन H.D. संकालीया ने कराया था।
- इनामगांव ताम्रपाषाण युग की सबसे बड़ी बस्ती थी।
- यहाँ के लोग विशेषकर मातृदेवी की पूजा करते थे।
- मानव द्वारा खोजी गई पहली धातु तांबा थी।
- बच्चों के गलों में ताँबे के मनकों का हार पहनाकर उन्हें दफनाने का साक्ष्य महाराष्ट्र के चंदोली और नेवासा बस्तियाँ में पाया गया है।
- स्टेटाइट और कार्नेलियन ताम्रपाषाण की प्रमुख किमती पत्थरों में से एक थे जिनके पास ये वस्तुएँ होती थी वे धनी कहलाते थे।
- चित्रित मृदभांड का सबसे पहले इस्तेमाल ताम्रपाषाण में हुआ था।
- सर्वप्रथम ताम्रपाषाण लोगों ने ही प्रायद्वीप भारत में बड़े-बड़े गाँव बसाये थे।
- ताम्रापाषाण युग के लोग लिखने की कला नहीं जानते थे और ना ही वे नगरों में रहते थे जबकि काँस्य युग के लोग नगरवासी हो गए थे।
- सबसे बड़ी ताम्र उपकरण मध्य प्रदेश के गुंगेरिया से प्राप्त हुई है।

जोरवे संस्कृति

- यह महाराष्ट्र में प्रचलित था।
- यह एक ग्रामीण संस्कृति थी।
- इस संस्कृति के अंतर्गत निम्नलिखित पुरास्थल आते हैं– इनामगाँव, नासिक, नेवासा, दैमाबाद आदि।

युग	स्थान	प्रमुख साक्ष्य
पाषाण युग	बोरी (मुंबई)	कुल्हाड़ी खंडक (चोपर) के प्रारंभिक उपयोग के साक्ष्य
	सोहन घाटी (पाकिस्तान के पंजाब प्रांत)	यहाँ चौपर-चौपिंग संस्कृति दिखाई पड़ती है। **Note :– चौपर** – एक तरफा धार वाला उपकरण **चैपिंग** – दोहरी धार वाला काटने का औजार
	भीमबेटका (रायसेन, मध्य प्रदेश)	देश की शैली चित्रकारी का सबसे बड़ा खजना।
	चौंतरा (मंडी, हिमाचल प्रदेश)	यह सोहन संस्कृति से संबंधित है।
	अतिरंपक्कम (चेन्नई, तमिलनडु)	यहाँ मिश्रित एबीवेली तथा ऐशुली उपकरण प्राप्त हुए हैं।
	पल्लवरम (चेन्नई, तमिलनाडु)	ब्रिटिश पुरातत्वशास्त्री राबर्ट ब्रुस फ्रुट ने 1864 में यहाँ पुरापाषाणकालीन औजारों की खोज की थी।
	बेलन घाटि (मिर्जापुर, यूपी)	आरंभिक पुरापाषाणकालीन औजार
मध्यपाषाण काल	बागौर (भीलवाड़ा, राजस्थान)	• मध्यपाषाण काल का सबसे बड़ा स्थल • पशुपालन के प्राचीनतम साक्ष्य
	सराय नाहर राय (प्रतापगढ़, यूपी)	शवों को आवासीय क्षेत्र में ही दफनाने के साक्ष्य।
	महादहा दमदमा (प्रतापगढ़, यूपी)	पुरुष-स्त्री दोहरा शवाधान के साक्ष्य।
	आदमगढ़ (होशंगाबाद, मध्यप्रदेश)	बागोर की तरह यहाँ से भी पशुपालन के आरंभिक साक्ष्य प्राप्त हुए हैं।
नवपाषाण काल	बुर्जहोम (श्रीनगर)	• गर्तावास और कब्रों में मानव के साथ कुत्ता को दफनाने के साक्ष्य। • अस्थि उपकरणों की साक्ष्य
	गुफकराल(पुलवामा,जम्मू-कश्मीर)	यहाँ के लोग कृषि और पशुपालन दोनों कार्य करते थे।
	मेहरगढ़ (बलूचिस्तन प्रांत)	• भारत में सर्वप्रथम गेहूँ व जौ की खेती का स्थल है। • मानव के साथ बकरी दफनाए जाने का साक्ष्य मिला है।
	चिरांद (छपरा, बिहार)	• भारत में नवपाषाण काल का पहला ज्ञात स्थान • अस्थि उपकरणों की साक्ष्य।
	दाओजली हैडिंग (असम)	पॉलिश पत्थर के औजार, चीनी मिट्टी तथा बड़ी संख्या में घरेलु बर्त्तन के साक्ष्य।
	कोल्डिहवा (इलाहाबाद, यूपी)	6000 ई.पू. चावल का साक्ष्य। हस्तनिर्मित मृदाभांड तथा निवास के लिए झोपिड़यों।
	बरूडीह (सिंह भूम, झारखंड)	उपकरण।

❐❐❐

02. आद्य-ऐतिहासिक काल (Proto Historic History)

☞ इस काल में मानव द्वारा लिखी गई लिपि को पढ़ा नहीं जा सकता है, किन्तु लिखित साक्ष्य मिले हैं। इस काल के जानकारी के स्रोत भी पुरातात्विक साक्ष्य ही है। इसमें सिंधु सभ्यता को रखते हैं।

सिंधु सभ्यता (Indus Valley Civilization)

☞ समाजिक रूप से रहने वाले व्यक्तियों को सभ्यता कहते हैं।
☞ यह सभ्यता सिंधु नदी के तट पर मिली थी, इसलिए इसे सिंधु सभ्यता कहते हैं।
☞ इसका विकास **2500 ई० पूर्व** से **1750 ई० पूर्व** तक हुआ।
☞ सिन्धु सभ्यता का आकार त्रिभुजाकार था।
☞ इसका क्षेत्र **13 लाख वर्ग किमी** में फैला था।
☞ सिन्धु सभ्यता में कुल **350 स्थल** मिले है जिसमें से **200 स्थल** केवल **गुजरात** में है।
☞ सिन्धु सभ्यता विश्व की पहली नगरीय (शहरी) सभ्यता थी जबकि विश्व की पहली सभ्यता मेसोपोटामिया की सभ्यता थी जो ग्रामीण सभ्यता थी।
☞ सिंधु सभ्यता की जानकारी सबसे पहले **चार्ल्स मैशन ने (1826 ई०)** दिया था।
☞ सिंधु सभ्यता का सर्वेक्षण **जेम्स कनिंघम ने (1853 ई०)** किया।
☞ **लॉर्ड कर्जन** ने **1904 ई०** में पुरातत्व विभाग की स्थापना किया था। जिसके महानिर्देशक सर जॉन मार्शल थे।
☞ सिंधु सभ्यता की पहली खुदाई **दयाराम साहनी** ने की।
☞ इसकी जानकारी के लिए पहली खुदाई हड़प्पा में **(1921 ई०)** हुई थी। अत: इसे हड़प्पा सभ्यता भी कहते हैं।
☞ सिंधु सभ्यता का नामकरण **जॉन मार्शल** ने किया था।
☞ इस सभ्यता को काँस्ययुगीन सभ्यता भी कहते है क्योंकि इसी समय काँसे की खोज हुई थी।

सिन्धु सभ्यता की सीमाएँ

1. इसकी उत्तरी सीमा कश्मीर के मांडा में चिनाब नदी के तट पर थी। इसकी खुदाई जगपति जोशी ने 1982 ई० में किया।
2. इसकी पूर्वी सीमा उत्तर-प्रदेश के आलमगीरपुर में थी। जो हिन्डन नदी के किनारे थी। यज्ञदत्त शर्मा के नेतृत्व में इसका उत्खनन हुआ।
3. इसकी दक्षिणी महाराष्ट्र के दैमाबाद में प्रवरा नदी के तट पर थी। यहाँ से धातु का एक रथ (इक्का गाड़ी) का प्रमाण मिला है।
4. इसकी पश्चिमी सीमा पाकिस्तान के सुतकांगेडोर में थी, जो दाश्क नदी के तट पर थी।

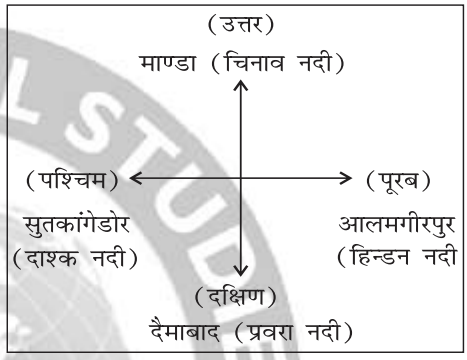

Trick :– सम = AD
डच – है पर (भारत में नहीं)

सम = AD	**डच हैं पर ~~भारत में नहीं~~**
स – सुतकांगेडोर	ड – दास्क
म – माण्डा	च – चिनाव
A – आलमीगीर	है – हिण्डन
D – दैमाबाद	पर – प्रवरा

हड़प्पा (1921)

☞ इसकी खुदाई दयाराम साहनी ने की। यह रावी नदी के तट पर पाकिस्तान के ''माऊण्ट गोमरी'' जिला में स्थित है।
☞ पिग्गट ने हड़प्पा और मोहनजोदड़ों को एक विस्तृत साम्राज्य की जुड़वा राजधानी कहा।

➢ **यहाँ से निम्नलिखित वस्तुएँ मिली हैं–**
(i) कुम्हार का चाक
(ii) श्रमिक आवास
(iii) अन्नागार
(iv) मातृदेवी की मूर्ति

(v) लकड़ी की ओखली
(vi) लकड़ी का ताबूत
(vii) R.H. 37 कब्रिस्तान
(viii) एक सिंग वाला जानवर
(ix) हाथी का कपाल
(x) स्वास्तिक चिन्ह
(xi) स्त्री के गर्भ से निकला हुआ पौधा (जिसे उर्वरता की देवी माना गया है)

Note :– चाँदी का सर्वप्रथम प्रयोग हड़प्पा सभ्यता के लोगों ने ही किए थे।

मोहनजोदड़ो (1922)

- इसकी खुदाई सन् 1922 ई. में राखलदास बनर्जी ने की। यह पाकिस्तान के लरकाना जिले में स्थित है। यह सिंधु नदी के तट पर है।
- यह सिंधु सभ्यता का सबसे बड़ा शहर है।
- मोहनजोदड़ों की सबसे प्रमुख विशेषता उसकी सड़कें थी जो सीधी दिशा में एक-दूसरे को समकोण (ग्रीड पद्धति) पर काटती हुई नगर को वर्गाकार अथवा चतुर्भुजाकार खंडों में विभाजित करती थी।

➢ **यहाँ से निम्नलिखित वस्तुएँ मिली हैं–**

(i) स्नानागार
(ii) अन्नागार (सबसे बड़ा)
(iii) पुरोहित आवास
(iv) सूती वस्त्र
(v) सबसे चौड़ी सड़क
(vi) सभागार
(vii) पशुपति शिव
(viii) काँसे की नर्तकी
(ix) ताँबे का ढ़ेर
(x) घर में कुआँ।

Note : मोहनजोदड़ों का अर्थ होता है। मृतकों का टीला किन्तु यहाँ से कब्रिस्तान नहीं मिला है बल्कि एक ही स्थान पर कंकाल का ढेर मिला है। यह कंकाल क्षतिग्रस्त हैं जो बाह्य आक्रमण को दर्शाता है।

Note : मोहनजोदड़ों का विशाल अन्नागार सिंधु सभ्यता का सबसे बड़ा भवन या इमारत है।

Remark :– स्वास्तिक मुहर सर्वाधिक मोहनजोदड़ों से मिला है। जिसका निर्माण शिलखड़ी से हुआ था।

सुतकांगेडोर (1927)

- इसकी खुदाई आरेण स्टाइन ने किया। यह सबसे पश्चिमी स्थल है जो दास्क नदी के किनारे है यहाँ से बंदरगाह मिले हैं।

चन्हुदड़ों (1931)

- इसकी खुदाई सन् 1931 ई. में गोपाल मजूमदार ने की।
- यह पाकिस्तान में सिंधु नदी के तट पर स्थित है।
- यह एक मात्र शहर है, जो दुर्ग रहित है।
- यह एक औद्योगिक शहर है।
- यह एक मात्र पुरास्थल है जहाँ से वक्राकार ईंटें मिली हैं।

➢ **यहाँ से निम्नलिखित वस्तुएँ मिली हैं–**

(i) सौंदर्य सामग्रियाँ
(ii) मनका
(iii) गुड़िया
(iv) सुई-धागा
(v) बिल्ली का पीछा करता हुआ कुत्ता का पद चिह्न
(vi) अलंकृत ईंट

Note :– दड़ो या कोट शब्द वाले स्थान पाकिस्तान में पाये गए।

Ex :– चन्हुदड़ों — वालाकोट
मोहनजोदड़ों — डावर कोट
जुरिद जोदड़ों — कोट दीजी

रोपड़ (1953)

- इसकी खुदाई यज्ञदत्त शर्मा ने 1953 ई. में की । यह पंजाब के सतलज नदी के किनारे स्थित है।
- इसका आधुनिक नाम रूपनगर है।
- यहाँ मानव के साथ-साथ उसके पालतू जानवरों (कुत्ता) का भी साक्ष्य मिला है।

Note : ऐसा ही शव नव-पाषाण काल में जम्मू-कश्मीर के बुर्जहोम में मिला था।

बनावली (1973)

- इसकी खुदाई 1973 ई. में रविन्द्र सिंह ने किया। यह हरियाणा में स्थित है। इसके समीप रंगोई नदी है। यहाँ जल-निकासी की व्यवस्था नहीं थी जिस कारण यहाँ नाली न मिलकर घरों में ही सोख्ता व्यवस्था मिला है।
- यहाँ की सड़के टेढ़ी-मेढ़ी थी अर्थात् सड़कें नगर को तारांकित (Star Shaped) भागों में विभाजित करती है।

कुणाल

- यह हरियाणा के फतेहबाद जिला में स्थित है।
- यहाँ से चांदी के दो मुकूट मिला है।

कालीबंगा

- इसका अर्थ होता है ''काली मिट्टी की चूड़ी''।
- यहाँ से अलंकृत ईंट, चूड़ी, जोता हुआ खेत हल एवं हवन कुँड मिले है।
- यह राजस्थान में सरस्वती (घग्गर) नदी के किनारे हनुमानगढ़ जिले में स्थित है।
- इसकी खोज अलमानंद घोष द्वारा की गई।
- कालीबंगा के लोग एक साथ दो फसल उगाते थे। वहाँ पे एक ही खेत में चना और सरसों उपजाने का विवरण मिला है।
- इसकी खुदाई B.K. थापड़ तथा B.B. लाल ने की।

धौलावीरा

- यह गुजरात में स्थित है।
- यह सिंधु सभ्यता का सबसे बड़ा स्थल है।
- इसकी खुदाई सर्वप्रथम जे.पी जोशी (1967) ने किया एवं पुनः इसकी खुदाई रविन्द्र सिंह बिस्ट द्वारा (1990-91) किया गया ।
- यह गुजरात तथा पाकिस्तान दोनों में फैला हुआ है।
- भारत में स्थित सबसे बड़ा स्थल राखीगढ़ी था जो हरियाणा में है।

सुरकोटदा

- यह गुजरात में स्थित है।
- इसकी खुदाई जगपति जोशी ने करवाया।
- यहाँ से कलश शवाधान तथा घोड़ो की हड्डी मिली है।
- यहाँ छोटे बंदरगाह भी मिले हैं।

लोथल

- इसकी खुदाई रंगनाथ राव ने भोगवा नदी के किनारे अहमदाबाद (गुजरात) में किया।
- यह सिंधु सभ्यता का बंदरगाह स्थल है।
- यहाँ से गोदीवाड़ा (Dock-yard) का साक्ष्य मिला है।
- यहाँ फारस की मुहर मिली है, जो विदेशी व्यापार का संकेत है।
- यहाँ से माप-तौल के समान भी मिले हैं।
- यहाँ से छोटा दिशा मापक यंत्र मिला है।
- यह एक औद्योगिक शहर था। इस शहर में घर के दरवाजें सड़कों की ओर खुलते थे।
- यहाँ से युगल शवाधान (जोड़े में लाश) मिला है, जो सतीप्रथा का साक्ष्य है।

रंगपुर

- यह गुजरात में स्थित है।
- यहाँ से धान की भूसी मिली है।

सिंधु सभ्यता की विशेषताएँ

- सिंधु सभ्यता एक नगरीय (शहरी) सभ्यता थी।
- यहाँ की सड़क एक-दूसरे को समकोण पर काटती है तथा ये पूरब-पश्चिम दिशा में थी, जिससे हवा द्वारा सड़क स्वतः साफ हो जाती थी।
- नगर नियोजन तथा जल निकास इसकी सबसे बड़ी व्यवस्था थी।
- इसकी नालियाँ ढ़की हुई थी तथा सड़क सीधी थी।
- अर्थव्यवस्था का मुख्य आधार कृषि था।
- इसका व्यापार (अतर्राष्ट्रीय) विदेशों से होता था।
- इनकी भाषा भावचित्रातमक थी।
- इनकी समाज मातृसतात्मक थी।
- इनकी लिपी दाएं से बाएं की ओर लिखा जाता था।
- हड़प्पा लिपी के प्रमाण से सबसे ज्यादा चित्र U आकार तथा मछली का चित्र देखने को मिलता है।
- इनके मुहरों पर सर्वाधिक 1 सिंग वाले जानवर का चित्र था।
- इनके मुहरों पर गाय तथा सिंह का चित्र नहीं मिला है।
- हड़प्पा सभ्यता के मुहरों में सेलखरी का प्रयोग मुख्य रूप से किया गया था।
- सिंधु घाटी सभ्यता के लोग लोहे से परिचित नहीं थे इसके अन्य धातु जैसे– सोना, चाँदी, ताँबा, टीन, काँसा इत्यादि से परिचित थे।
- यहाँ माप-तौल के लिए न्यूनतम बाट 16 kg का था जो दशमलव प्रणाली के सूचक हैं।
- सिंधु सभ्यता के लोग युद्ध या तलवार से परिचित नहीं थे।
- सिंधु सभ्यता में मिट्टी के बर्तनों में लाल रंग का उपयोग होता था।
- सिंधुवासी विश्व में कपास के प्रथम उत्पादक थे।
- सिंधु घाटी सभ्यता के लोग कृषि भी करते थे, पशुपालन भी करते थे परंतु उनका मुख्य व्यवसाय व्यापार था।
- यहाँ के लोग मनोरंजन के लिए चौपर और पासा खेलते थे।
- सबसे प्रिय देवता – शिव
- इनका पसंदीदा वृक्ष – पीपल
- इनका पसंदीदा जानवर – सांढ़ तथा वृषभ (बसहा बैल)
- इनका पंसदीदा पक्षी – बत्तख
- इनका आदरणीय नदी – सिन्धु

➢ **सिंधु सभ्यता का समाज 4 वर्गों में बँटा हुआ था–**

1. विद्वान
2. योद्धा

3. व्यापारी एवं शिल्पकार
4. श्रमिक

वस्तुओं का आयात	किस प्रदेश से?	वस्तुओं का आयात	किस प्रदेश से?
सोना	अफगानिस्तान, ईरान, कर्नाटक	गोमेद	सौराष्ट्र
चाँदी	अफगानिस्तान, ईरान	लाजवर्द	मोसोपोटामिया
ताँबा	ब्लूचिस्तान, खेतड़ी, ओमान	सीसा	ईरान
टिन	ईरान, अफगानिस्तान		

➢ **सिन्धु सभ्यता के पतन के कारण–**

☞ सिंधु सभ्यता के विनाश का सबसे बड़ा कारण बाढ़ को माना जाता है।

☞ वर्तमान में हुए उत्खनन से आईआईटी खड़गपुर को सिंधु घाटी सभ्यता से संबंधित कुछ परिमाण मिला जिस आधार पर कहा जा रहा है कि इसके पतन का महत्वपूर्ण कारण जलवायु परिवर्तन है।

विद्वान	पतन के कारण
गार्डन चाइल्ड एवं व्हीलर	बाह्य एवं आर्यों के आक्रमण
जॉन मार्शल अर्नेस्ट एवं एस.आर.राव	बाढ़
आरेल स्टेइन, अमलानंद घोष	जलवायु परिवर्तन
एम.आर. साहनी	भूतात्विक परिवर्तन/जलप्लावन
जॉन मार्शल	प्रशासनिक शिथिलता
के.यू.आर. कनेडी	प्राकृतिक आपदा (मलेरिया, महामारी)

सिंधु सभ्यता के प्रमुख स्थल

	प्रमुख स्थल	अवस्थित	उत्खननकर्ता	उत्खनन वर्ष	नदी
1.	हड़प्पा	मोंटगोमरी जिला, पंजाब (पाकिस्तान)	दयाराम साहनी और माधोस्वरूप वत्स	1921 ई०	रावी
2.	मोहनजोदड़ो	लरकाना जिला, सिंध प्रांत (पाकिस्तान)	राखालदास बनर्जी	1922 ई०	सिन्धू
3.	कालीबंगा/कालीबंगन	हनुमानगढ़ जिला, राजस्थान (भारत)	बी०बी० लाल और बी०के० थापर	1961-69 ई०	घग्गर (सरस्वती
4.	धौलावीरा	कच्छ जिला, गुजरात (भारत)	रवीन्द्र सिंह विष्ट	1990-91 ई०	लूनी
5.	चन्हूदड़ों	सिंध प्रांत (पाकिस्तान)	गोपाल मजुमदार	1931 ई०	सिन्धु
6.	लोथल	अहमदाबाद जिला, गुजरात (भारत)	रंगनाथ राव	1955 ई०/1962 ई०	भोगवा
7.	कोटदीजी	सिंध प्रांत का खैरपुर स्थान (पाकिस्तान)	फजल अहमद खान	1955 ई०, 1957 ई०	सिन्धु
8.	बनावली	हिसार जिला, हरियाणा (भारत)	रवीन्द्र सिंह विष्ट	1974 ई०	सरस्वती (रंगोई)
9.	रोपड़	रोपड़ जिला, पंजाब (भारत)	यज्ञदत्त शर्मा	1953-56 ई०	सतलज
10.	रंगपुर	काठियावाड़ जिला, गुजरात, अहमदाबाद (भारत)	रंगनाथ राव	1953-54 ई०	भादर
11.	आलमगीरपुर	मेरठ जिला, उत्तर प्रदेश (भारत)	यज्ञदत्त शर्मा	1958 ई०	हिन्डन
12.	सुतकांगेडोर	मकरान में समुद्र तट के किनारे (पाकिस्तान के ब्लूचिस्तान प्रांत में)	ऑरेल स्टाईन (आर०एल०स्टाइन)	1927 ई०	दाश्क
13.	सुत्काकोह	मकरान के समुद्र तट पर (पाकिस्तान के ब्लूचिस्तान प्रांत में)	जॉर्ज डेल्स	1962 ई०	शादीकोर

मेसोपोटामिया की सभ्यता (10,000 ई.पू.)

☞ इसका विकास इराक में टिगरीस एवं यूफ्रेट्स नदी (दजला-फरात) नदियों के मध्य में हुआ है।

☞ यहाँ की मिट्टी अत्यधिक उपजाऊ थी। यह सभ्यता ग्रामीण थी। इसके अर्थव्यवस्था का मुख्य आधार कृषि था।

☞ इस समय के मंदिरों को जिगुरद कहा जाता था।

➢ **मेसोपोटामिया की सभ्यता के 4 भाग थे–**

(i) सोमेरियन की सभ्यता
(ii) बेबीलोन की सभ्यता
(iii) सिरिया की सभ्यता
(iv) कैल्ड्रिया की सभ्यता

☞ **झूलता हुआ बगीचा** बेबीलोन में स्थित है।

☞ सिकंदर ने इस सभ्यता का विनाश कर दिया और इसके स्थान पर ग्रीक सभ्यता को थोप दिया।

☞ विश्व की सबसे पहली सभ्यता मेसोपोटामिया की सभ्यता थी। जबकि विश्व की पहली नगरीय सभ्यता सिंधु सभ्यता थी।

मिस्त्र की सभ्यता (2100 ई.पू.)

☞ यह मिस्त्र के रेगिस्तानों में स्थित थी।

☞ इसे नील नदी की देन कहते है।

☞ इस सभ्यता की विकास फिरौन के नेतृत्व में किया गया था।

- इस सभ्यता में पिरामिड, सूर्य कैलेण्डर तथा ममी का विकास हुआ था। अर्थात् इस सभ्यता का रसायन शास्त्र सुदृढ़ था।
- गिजा का पिरामीड सबसे प्रसिद्ध है।

रोम की सभ्यता (600 ई.पू.)

- इसे इटली में विकसित किया गया था।
- इन्होंने पूरे भू-मध्यसागर पर अधिकार कर लिया था।
- प्राचीन सभ्यता के यह सबसे विकसित सभ्यता थी। आज भी इस सभ्यता के अवशेष सुरक्षित बचे हुए हैं। जो पर्यटन का आकर्षण केन्द्र हैं।
- इस सभ्यता के दो सबसे बड़े राजा जुलीयस सीजर एवं आगस्टस थे।

  Note :– जूलियस सीजर की हत्या धोखे से उसके मंत्रिण्डल द्वारा कर दी गई।
- जूलयिस सीजर नामक नाटक Willian Shakespear ने लिखा है।

फारस की सभ्यता (500 ई.पू.)

- यह वर्तमान में ईरान में है। इस सभ्यता का विकास तेजी से हुआ था। इन्होंने पूरे अरब प्रायद्वीप पर अधिकार कर लिया था।
- इनकी भाषा फारसी थी तथा पारसी धर्म को मानते थे।
- सिकंदर ने इस धर्म का अंत कर दिया।

स्पाटा

- स्पाटा अपने बहादूर सैनिकों के लिए विख्यात है। यह ग्रीस के पास का एक छोटा सा क्षेत्र था।
- स्पाटा के मात्र 300 सैनिकों ने लियोनाइड्स के नेतृत्व में ग्रीस के 20000 सैनिकों को मात दे दी थी।
- ग्रीस की विशाल सेना का नेतृत्व जर्कसीज कर रहा था।
- जर्कसीज ने धोखे से Spartans को हरा दिया।

➢ **पीली नदी की सभ्यता–** यह चीन में 5000 ई.पू. विकसित हुई थी। ह्वांगहो नदी के तट पर इसका विस्तार था। यह सभ्यता अपने उपजाऊ भूमि के लिए प्रसिद्ध थी।

❐❐❐

KHAN GLOBAL STUDIES
Kisan Cold Storage Campus, Musallahpur, Patna-6
KHAN SIR

03. ऐतिहासिक काल (Historical Period)

☛ इसके बारे में लिखित स्त्रोत उपलब्ध है, और इसे पढ़ा भी जा सका है। इसके अंतर्गत वैदिक काल से लेकर अभी तक का समय आता है।

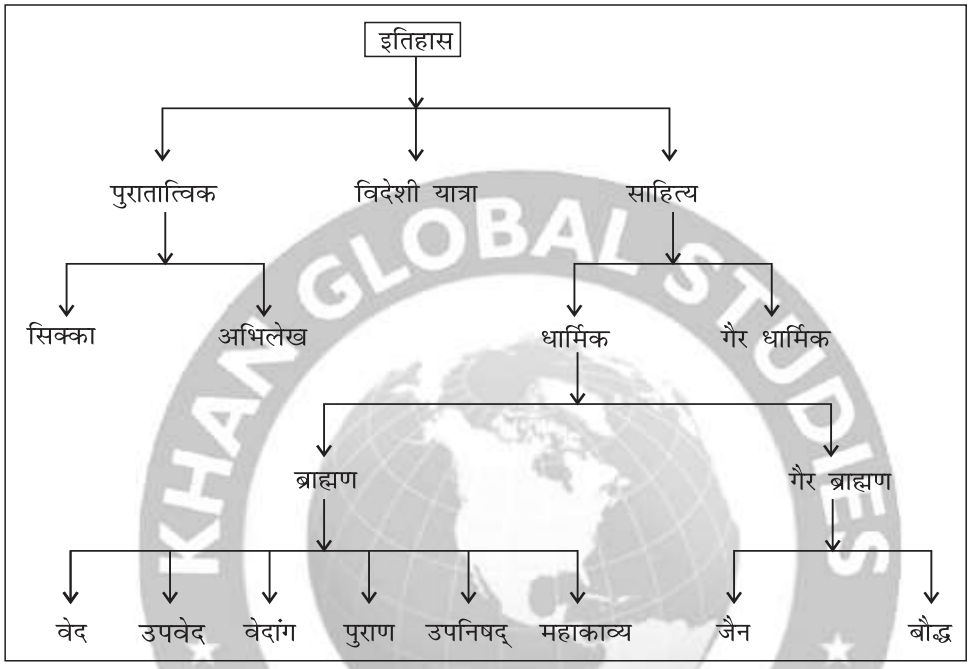

सिक्का (Coins)

☛ सिक्के का अध्ययन न्यूमेसमेटिक्स कहलाता है।
☛ टेराकोटा का सिक्का मिट्टी का बना होता था। यह सिंधु सभ्यता में बना था।
☛ मौर्य काल के समय आहत या पंचमार्क सिक्के का प्रयोग होता था। आहत् सिक्कों पर लिखावट नहीं होती थी। केवल चित्र बने होते थे। यह पहला धातु का सिक्का था।
☛ पर्ण चाँदी के सिक्के थे, जो मौर्य काल में प्रचलित थे।
☛ सीसा का सिक्का सातवाहन काल में प्रचलित थे।
☛ पहली बार सोने का सिक्का यूनानी शासकों द्वारा प्रचलित किया गया।
☛ शुद्ध सोने का सिक्का कुषाण शासको द्वारा प्रचलित किया गया।
☛ सर्वाधिक मात्रा में तथा सबसे अधिक अशुद्ध सोने का सिक्का गुप्त काल में प्रयोग हुआ। इस समय स्कंद गुप्त शासक थे।
☛ चाँदी का सिक्का गुप्त काल में चन्द्रगुप्त-II विक्रमादित्य के समय प्रचलित हुआ।
☛ राजा-रानी का सिक्का गुप्त काल में चन्द्रगुप्त-II विक्रमादित्य के समय प्रचलित हुआ।
☛ मयूर शैली की सिक्का गुप्त काल में समुद्र गुप्त के समय प्रयोग में लाया गया। इस सिक्के का प्रचलन गुप्त काल में सर्वाधिक था।
☛ कौड़ी का प्रयोग भी गुप्त काल में ही हुआ।
☛ चमड़े का सिक्का हुमायूं के शासन काल में शिहाबुद्दीन ने प्रारम्भ करवाया था।
☛ चांदी के रुपये का प्रारंभ शेरशाह शूरी ने किया।
☛ तांबे के दाम का प्रारम्भ शेरशाह शूरी ने ही किया।
☛ सोने की अशर्फी का प्रारम्भ भी शेरशाह शूरी ने ही किया।

अभिलेख (Epigraph/Inscriptions)

☛ पत्थरों को खोदकर लिखना अभिलेख कहलाता है।
☛ विश्व में अभिलेख लिखने का प्रारम्भ ईरान के शासक डेरियस ने किया था तथा भारत में अभिलेख का जनक अशोक को कहा जाता है।
☛ पहला अभिलेख बोगजगोई से मिला जो तुर्की या एशिया माइनर में है।
☛ अभिलेखों का अध्ययन एपिग्राफी कहलाता है।

अभिलेख के प्रकार

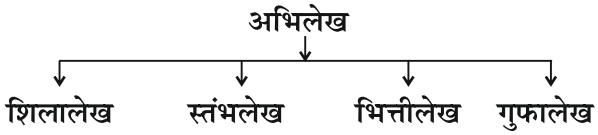

- ☛ छोटे पत्थरों पर लिखना शिलालेख कहलाता था।
- ☛ सर्वाधिक प्रचलन शिलालेख का था।
- ☛ स्तंभलेख दूर से आकर्षित दिखते थे।
- ☛ स्तम्भ के समान ऊँचे पत्थरों पर लिखना स्तम्भ लेख कहलाता है।

प्रमुख अभिलेख

- ➢ **हाथीगुफा अभिलेख (उड़ीसा)**– इसे कलिंग राजा खारवेल द्वारा लिखवाया गया था। इसमें कलिंग युद्ध की चर्चा है। युद्ध के समय कलिंग का राजा नंदराज था। (गंगवंश)
- ➢ **ऐहोल अभिलेख (राजस्थान)**– इनमें पुलकेशिन-II के हर्षवर्धन पर विजय की चर्चा की गई है। इसकी रचना रविकीर्ति ने की है।
- ➢ **जुनागढ़ अभिलेख (गुजरात)**– इसमें रूद्रदामन ने सुदर्शन झील की चर्चा की है। उस झील को चन्द्रगुप्त मौर्य ने बनवाया था।
- ➢ **प्रयाग अभिलेख (इलाहाबाद)**– इसमें समुद्रगुप्त ने अपने विजय अभियान की चर्चा की है।
- ➢ **नासिक अभिलेख (महाराष्ट्र)**– यह अभिलेख गौतमी बलश्री द्वारा लिखवाया गया था। इसमें सातवाहन कालीन घटनाओं का विवरण मिलता है।
- ➢ **ग्वालियर अभिलेख (मध्यप्रदेश)**– यह अभिलेख राजा भोज प्रतिहार के समय में बालादित्य द्वारा लिखा गया था। इसमें गुर्जर प्रतिहार शासकों के विषय में जानकारी मिलती है।
- ➢ **मंदसौर अभिलेख (मध्यप्रदेश)**– यह अभिलेख मालवा नरेश यशोवर्मन के समय में वासुल द्वारा लिखा गया था। इसमें सैनिक उपलब्धियों का वर्णन मिलाता है।
- ➢ **देवपाड़ा अभिलेख (पं. बंगाल)**–यह अभिलेख बंगाल शासक विजय सेन द्वारा लिखवाया गया था। इसमें सेन राजवंश के शासन की महत्वपूर्ण घटनाओं का वर्णन मिलता है।

स्तम्भलेख (Pillar / Edicts)

- ☛ यह स्तम्भ के समान ऊँचे होते हैं।
- ➢ **हेलियोडोटस/गरुड़ध्वज स्तम्भलेख (M.P.)**– इसमें भागभ्रद ने भागवत् धर्म की जानकारी दी है।
- ☛ चंद्रगुप्त विक्रमादित्य का महरौली (दिल्ली) में स्थित स्तंभलेख लोहे का है। जिसमें अभी तक जंग नहीं लगा है।

विदेशी यात्रियों द्वारा भारत का वर्णन

- **हेरोडोटस**– हिस्टोरिका
- **मेगास्थनीज**– इण्डिका
- **Periplus of the Erythraean Sea**– अज्ञात
- **टॉलमी**– ज्योग्राफिका
- **प्लिनी**– नेचुरल हिस्ट्री
- **अलबेरूनी**– किताबुल-हिन्द/तहकीक -ए-हिन्द
- **मार्कोपोलो**– द बुक ऑफ सर मारकोपोलो (काकतिय वंश)
- **फाह्यान**– फो-क्यु-की (चन्द्रगुप्त-II)
- **ह्वेनसांग**– सी-यू-की (हर्षवर्धन)
- **तारानाथ**– कंग्युर, तंग्युर

- ➢ **फाह्यान (399 ई.)**– ''फो-क्यु-की'' (पुस्तक) यह चन्द्रगुप्त-II (विक्रमादित्य) के दरबार में आया था। इसमें उस समय के भवन तथा कौड़ी की चर्चा है।
- ➢ **संयुगन (518 ई.)**– (चीन) इसने अपने तीन वर्ष की यात्रा में बौद्ध धर्म की प्रतियाँ एकत्रित की।
- ➢ **ह्वेनसांग (629 ई.)**– सी-यू-की यह हर्षवर्धन के दरबार में आया।
- ☛ इसने नालंदा विश्व विद्यालय में अध्ययन तथा अध्यापन दोनों किया। इसे यात्रियों का राजकुमार कहते हैं।
- ➢ **इत्सिंग (673 ई.)**– यह चीनी यात्री था। यह त्रिपिटक की 400 प्रतियाँ (Photocopy) अपने साथ चीन लेकर गया था।
- ➢ **इब्नबतूता**– यह मोरक्को का रहने वाला था। यह 7000 किमी. की यात्रा करके मुहम्मद-बिन-तुगलक के दरबार में आया। इसकी पुस्तक ''रेहला'' थी।
- ➢ **अब्दुल रज्जाक**– यह फारस का रहने वाला था। यह विजयनगर साम्राज्य में आया था। इसकी पुस्तक मतला-ए-साहिन है। यह कृष्णदेव राय के दरबार में आया था।

साहित्यिक स्त्रोत

- ☛ लिखित स्त्रोत को साहित्यिक स्त्रोत कहते हैं। प्राचीन इतिहास की जानकारी का यह सबसे बड़ा स्त्रोत है।
- ➢ **गैर धार्मिक स्त्रोत**– इसका संबंध किसी भी धर्म से नहीं रहता है।

1. **मनुस्मृति** - इसकी रचना मनु ने किया। यह राजनीति से संबंधित पहली पुस्तक है। इसमें महिला एवं दलितों को नीचे दिखाया गया है।
2. **अर्थशास्त्र**- इसका संबंध राजनीति से है। इसकी रचना चाणक्य ने किया। अर्थशास्त्र मैक्यिावेली की रचना The Prince के समान है। चाणक्य को भारत का मैकियावेली कहते है। अर्थशास्त्र का प्रकाशन समाशास्त्री द्वारा किया गया। इसमें 15 अधिकरण है।

3. **पंचतंत्र**- विष्णुशर्मा की पुस्तक पंचतंत्र को 15 भारतीय तथा 40 विदेशी भाषा में अनुवादित किया गया है।
4. **मृक्षकटिकम्**- शूद्रक ने मृक्षकटिकम पुस्तक लिखी। जिसका अर्थ है मिट्टी का खिलौना।
5. **राजतरंगीणी**- कल्हण की पुस्तक राजतरंगीणी में काश्मीर का इतिहास है।
6. **कादम्बिरी तथा हर्षचरित**- बाणभट्ट

➢ **धार्मिक स्त्रोत–** वैसी पुस्तक जिसका संबंध किसी-न-किसी धर्म से रहता है उसे धार्मिक स्त्रोत कहते है।

➢ **गैर-ब्राह्मण–** वैसे स्त्रोत जिसका संबंध हिन्दु धर्म से नहीं रहता, उसे गैर-ब्राह्मण कहते हैं।

➢ **जैन-साहित्य–** यह प्राकृत भाषा में मिले हैं, इन्हें आगम कहते हैं।

उदाहरण– 12 अंग, 12 उपांग, अचरांग सूत्र, भगवति सूत्र, कल्पसूत्र, आदि-पुराण।

अचरांग सूत्र– इनमें जैन भिक्षुओं के आचार नियम व विधि निषेधों का विवरण।

भगवति सूत्र– इसमें महावीर के जीवन की चर्चा है।

न्यायधम्मकहा सूत्र– महावीर के शिक्षाओं का संग्रह।

➢ **बौद्ध साहित्य–** इन ग्रंथों का संबंध बौद्ध धर्म से है। बौद्ध साहित्य पाली भाषा में मिले हैं। जातक ग्रन्थ में महात्मा बुद्ध के पूर्व जन्म की 200 कहानियाँ हैं।

☛ ललित विस्तार में महात्मा बुद्ध की पूरी जीवनी है।

☛ अंगुत्तर निकाय में 16 महाजनपद की चर्चा है।

☛ बौद्ध धर्म की सबसे पवित्र पुस्तक त्रिपिटक है, जो 3 पुस्तकों का समूह है।

1. **सूत पिटक–** यह सबसे बड़ा पिटक है। इसे बौद्ध धर्म का इंसाइक्लोपिडिया कहते हैं।
2. **विनय पिटक–** यह सबसे छोटा पिटक है। इसमें बौद्ध धर्म के प्रवेश की चर्चा है।
3. **अभिधम्म पिटक–** इसमें महात्मा बुद्ध के दार्शनिक विचारों की चर्चा है।

➢ **ब्राह्मण ग्रंथ–** वैसा ग्रंथ जिसका संबंध हिंदु धर्म से है उसे ब्राह्मण ग्रंथ कहते है।

☛ सभी ब्राह्मण ग्रंथों में सबसे विशाल शतपथ ब्राह्मण ग्रंथ है।

Note :– वैदिक काल में जौ को यव, गेहूँ को गोधून तथा चावल को ब्रीही कहा जाता था।

वेद

☛ वेद का शाब्दिक अर्थ 'ज्ञान' होता है। यह सबसे प्रमुख ब्राह्मण ग्रंथ है।

	वेद	ज्ञानी	ब्राह्मण ग्रन्थ	उपवेद	ज्ञानी
1.	ऋग्वेद	होतृ	कौशतकीय, एतरेय	आयुर्वेद	प्रजापति
2.	सामवेद	उद्गाता	पंचवीश	गंधर्ववेद,	नारद
3.	यजुर्वेद	अध्वर्यु	तैतरेय, शतपथ	धनुर्वेद	विश्वामित्र
4.	अथर्ववेद	ब्रह्मा	गोपथ	शिल्पवेद	विश्वकर्मा

☛ वेद-वेदों की रचना ईश्वर ने की है। अत: वेद को अपौरूषेय कहा जाता है।

☛ गुप्तकाल में कृष्ण द्वैवायन व्यास ने वेदों का संकलन (Collection) किया।

☛ प्रारम्भ में वेदों की संख्या- 3 (ऋग्वेद, सामवेद तथा यजुर्ववेद) थी, अत: वेद को त्रयी कहा जाता है।

☛ अथर्ववेद को बाद में शामिल किया गया इसलिए इसे वेदत्रैयी में नहीं रखते हैं।

1. **ऋग्वेद–** इसका शाब्दिक अर्थ मंत्रों/ऋचाओं का संग्रह होता है। इसमें 10 मंडल, 1028 सुक्त तथा 10,580 ऋचाएँ हैं। ऋचाओं की अधिकता के कारण ही इसे ऋग्वेद कहते हैं।

☛ यह सबसे प्राचीन एवं सबसे बड़ा वेद है। इसमें गायत्री मंत्र की चर्चा है, जो सूर्य भगवान को समर्पित है।

☛ पहली बार शूद्र का प्रयोग ऋग्वेद में हुआ।

☛ ऋग्वेद का पहला तथा 10वां मंडल बाद में लिखा गया है जबकि सबसे पहले 7वाँ मंडल लिखा गया है।

☛ 9वें मंडल में सोम देवता की चर्चा है। यह जंगल के देवता थे।

☛ ऋग्वेद के ज्ञानी को होतृ कहते हैं।

☛ ऋग्वेद का उपवेद 'आयुर्वेद' है। जिसमें चिकित्सा की चर्चा है। इसके ज्ञानी को प्रजापति कहते हैं।

☛ इसमें दसराज्ञ युद्ध की चर्चा है।

2. **सामवेद–** साम का शाब्दिक अर्थ 'गान' होता है। इसमें 1549 मंत्र हैं। किन्तु वास्तव में 75 मंत्र ही सामवेद के हैं। बाकी मंत्रों को ऋग्वेद से ग्रहण कर लिया है।

☛ सामवेद में भारतीय संगीत के सात स्वर सा, रे, गा, मा, पा, धा, नी की चर्चा है।

☛ ये संगीत यज्ञ के समय गाये जाते हैं।

☛ सामवेद के ज्ञानी को 'उद्गाता' कहते हैं।

☛ सामवेद का उपवेद 'गंधर्ववेद' है।

☛ गंधर्ववेद के ज्ञानी को 'नारद' कहते हैं।

☛ भारतीय संगीत का जन्म 'सामवेद' से हुआ है।

3. **यजुर्वेद–** इसमें 1990 मंत्र हैं। इसमें युद्ध एवं कर्म-कांड की चर्चा है।

- यह एकमात्र वेद है जो गद्य और पद्य दोनों में है।
- **इसे 2 भाग में बाँटते हैं–**
  (i) कृष्ण यजुर्वेद (गद्य)
  (ii) शुक्ल यजुर्वेद (पद्य)
- इसके ज्ञानी को अध्वर्यु कहते हैं। यजुर्वेद का उपवेद धनुर्वेद है। धनुर्वेद के ज्ञानी को विश्वामित्र कहते हैं।

4. अथर्ववेद– इसकी रचना सबसे बाद में उत्तर वैदिक काल में हुई। इसमें 5849 मंत्र तथा 731 सूक्त हैं।

- इसमें जादू-टोना, वशीकरण, रोग-निवारक औषधि, इत्यादि की चर्चा है।
- अथर्ववेद का उपवेद शिल्पवेद है।
- अथर्ववेद के ज्ञानी को ब्रह्मा कहा जाता है।
- अथर्वा ऋषि ने इस वेद को लिखा है।
- अथर्ववेद में ही सर्वप्रथम मगध, अंग और राजा परिक्षित के बारे में उल्लेख किया गया है।

उपवेद

- वेदों को अच्छी तरह से समझने के लिए उपवेद की रचना किया गया। सभी वेद के अपने-अपने उपवेद है।
  1. **आयुर्वेद**- ऋग्वेद का उपवेद है।
  2. **गंधर्ववेद**- सामवेद का उपवेद है।
  3. **धनुर्वेद**- यजुर्वेद का उपवेद है।
  4. **शिल्पवेद**- अथर्ववेद का उपवेद है।
- **आरण्यक–** वैसी पुस्तक जिसकी रचना जंगल में की गई हो, आरण्यक कहलाता हैं। इसकी संख्या 7 है।
- अथर्ववेद को छोड़कर सभी पुस्तक आरण्यक हैं।

वेदांग

- वेदों को भलि-भाँति समझने के लिए वेदांग की रचना की गई।
- **वेदांग की संख्या 6 हैं–**

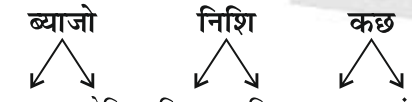

व्याकरण = व्याकरण (वेद के मुख)
ज्योतिष = खगोल विज्ञान (वेद की आंखे)
निरूक्त = निरूक्त शास्त्र (वेदों का कान)
शिक्षा = शिक्षा शास्त्र (वेद का मस्तिष्क)= उच्चारण का विज्ञान
कल्प = कल्प शास्त्र (कर्मकांड का प्रतिपादन)
छंद = छंद शास्त्र (वेद मंत्रों के सही-सही उच्चारण)

- व्याकरण की पहली पुस्तक पाणिनी की अष्टाध्यायी थी।
- ज्योतिष की सबसे बड़ी पुस्तक महाभाश्य है।
- निरूक्त की रचना यास्क महोदय ने किया। जिसका अर्थ निर्वचन होता है अर्थात् वैदिक शब्दों का अर्थ व्यवस्थित रूप से समझना ही निरूक्त का प्रयोजन है।
- गौतम ऋषि ने कल्प की रचना किया।
- वेद-वेदांग पढ़ाने वाले अध्यापक को उपाध्याय कहते हैं।

पुराण

- इसकी रचना महर्षि लोमहर्ष तथा उग्रश्रवा ने किया। इसकी संख्या 18 है।
- इसे पाँचवा वेद या वेदों का वेद कहते है।
- इससे प्राचीन राजवंशों की जानकारी मिलती है।
- स्त्री और शूद्र को इसे पढ़ने की अनुमति नहीं थी। वे इसे सुन सकते थे।

➢ **विष्णु पुराण–** इससे मौर्य वंश की जानकारी मिलती है।
➢ **मत्स्य पुराण–** इससे सातवाहन वंश की जानकारी मिलती है। इसमें विष्णु भगवान के 10 अवतारों की चर्चा है।
➢ **वायु पुराण–** इसमें गुप्त वंश की जानकारी मिलती है। इसमें लिखा है कि समुद्रगुप्त का घोड़ा तीन समुद्र का पानी पीता था।

उपनिषद्

- इसका अर्थ होता है, गुरू के समीप बैठकर ज्ञान प्राप्त करना। यह ब्राह्मणों के विरुद्ध राजपूतों की एक प्रक्रिया मानी जाती है।
- उपनिषद् 108 हैं, किन्तु 13 उपनिषद् को ही मान्यता प्राप्त है।

➢ **वृहद् नारायण उपनिषद्–** यह सबसे बड़ा तथा प्राचीन है।
➢ **कठोपनिषद–** इसमें यम एवं नचिकेता की चर्चा है। इसमें 'ऊँ' शब्द के महत्व को दर्शाया गया है।
➢ **मुंडकोपनिषद्–** इसमें 'सत्यमेव जयते' की चर्चा है।
➢ **श्वेताश्वरूपनिषद्–** इसमें सत्यम् शिवम् और सुन्दरम् की चर्चा है।
➢ **जबालोपनिषद्–** इसमें ब्रह्मा, विष्णु एवं महेश अर्थात् त्रिमूर्ति की चर्चा है। सर्वप्रथम 4 आश्रमों के बारे में उल्लेख इसी उपनिषद् में किया गया है।
➢ **अलोपनिषद्–** यह सबसे बाद का उपनिषद है। इसकी रचना अकबर के साथ हुई।

Note : - उपनिषद् मूलत: दर्शन पर आधारित है।

- यजुर्वेद के प्रमुख उपनिषद्- कापोपनिषद्, मैत्रायत्री और श्वेताश्वरूपनिषद्।
- सामवेद के प्रमुख उपनिषद्- छंदोग्य तथा जैमिनीय।
- अथर्ववेद के प्रमुख उपनिषद्- मुंडकोपनिषद्, प्रश्नोपनिषद् तथा मांडुक्योपनिषद्।

प्रमुख साहित्य

- स्मृति साहित्य में प्राचीन राजवंशों की जानकारी मिलती है। स्मृति साहित्य की संख्या 36 हैं (विष्णु स्मृति + नारद स्मृति) से गुप्त काल की जानकारी मिलती है।
- मनुस्मृति तथा याज्ञवल्क्य स्मृति से मौर्य काल की जानकारी मिलती है।
- याज्ञवल्क्य स्मृति में जुआ खेलने को उचित बताया गया।
- मनुस्मृति को धर्म शास्त्र कहते हैं। इसमें ऊँची जाति को वरीयता दी गई है। दलित तथा महिला को नीचे दिखाया गया है।
- इसमें विवाह के लिए पुरुष की आयु 25 वर्ष तथा लड़की की आयु 12 वर्ष बताया गया है।
- इसमें 8 प्रकार के विवाह की चर्चा है।
- संस्कार की संख्या 16 होती है।
- गर्भाधान प्रथम संस्कार होता है।
- दाह संस्कार अंतिम संस्कार (अंत्येष्टि) होता है।

➢ **ऋण तीन प्रकार के होते हैं–**

(i) देवऋण– धार्मिक अनुष्ठान कर इससे मुक्ति मिलती थी।

(ii) ऋषिऋण– इसमें अपने पुत्र को शिक्षित कर इससे मुक्ति मिलती थी।

(iii) पितृऋण– संतान उत्पन्न कर इस ऋण से छुटकारा पाया जा सकता था।

➢ **पुरुषार्थ 4 प्रकार के होते हैं–**

(i) धर्म– सामाजिक नियम व्यवस्था

(ii) अर्थ– आर्थिक संसाधन

(iii) काम– शारीरिक सुख-भोग

(iv) मोक्ष– आत्मा का उद्धार

महाकाव्य

➢ **महाकाव्य की संख्या 2 है–**

1. रामायण 2. महाभारत

1. रामायण– इसकी रचना महर्षि वाल्मीकि ने की। प्रारम्भ में इसमें 12000 श्लोक थे, किन्तु वर्तमान में 24000 श्लोक हैं। इसे गुप्तकाल में पूरा किया गया था।

- अकबर के समय रामायण को फारसी भाषा में अनुवाद बदायुनी ने किया।
- इसे आदिकाव्य की संज्ञा दी जाती है।
- रामायाण महाकाव्य महाभारत की अपेक्षा अधिक ठोस है।

2. महाभारत– यह विश्व का सबसे बड़ा महाकाव्य है। इसकी रचना वेदव्यास ने की। इसका प्रारम्भिक नाम जयसंहिता था। प्रारंभ में 8800 श्लोक थे।

- वर्तमान में 1 लाख श्लोक है अब इसे शतसाहस्री संहिता अर्थात् महाभारत कहते हैं।
- महाभारत में कथोप कथाएँ के साथ उपदेश भी हैं।
- महाभारत के खंडों को पर्व कहा जाता है। इसमें कुल 18 पर्व है। सबसे महत्वपूर्ण पर्व भीष्म पर्व है। जिसमें अर्जुन तथा कृष्ण के वार्तालाप की चर्चा है। भीष्म-पर्व को भागवत् गीता या गीता कहा जाता है।
- अकबर के समय महाभारत को फारसी भाषा में रज्जनामा के नाम से अनुवाद किया गया था।

वैदिक काल

- इस काल में वेदों की रचना की गई। अत: इसे वैदिक काल कहा गया। यह पूर्णत: ग्रामीण सभ्यता थी।
- वैदिक काल 1500 ई.पू. से 600 ई.पू. तक था।

➢ **संक्रमण काल**- सिंधु सभ्यता का पतन 1750 ई. तक हो गया। इसके बाद अगले 250 साल में धीरे-धीरे वैदिक सभ्यता का विकास प्रारंभ हुआ। इसी 250 साल को संक्रमण काल कहते है।

➢ **वैदिक काल को 2 भागों में बाँटते हैं-**

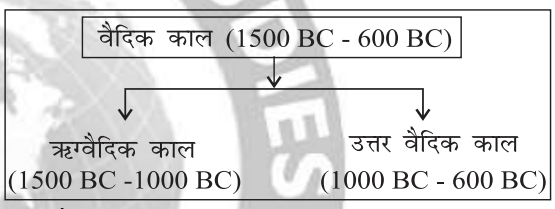

➢ **ऋग्वैदिक काल**- यह काल प्राचीन था। इस समय जाति का निर्धारण कर्म के आधार पर किया जाता था। यह काल 1500 ई.पू. से 1000 ई.पू. तक था।

➢ **उत्तर वैदिक काल**- इसका विकास 1000-600 ई. पू. तक हुआ। इस काल में जाति का निर्धारण वंश के आधार पर होने लगा।

- उत्तर वैदिक काल में लोहे की खोज हुई।
- भारत में लोहे का प्रचलन पहली बार 1000 ई. पूर्व में आरम्भ माना जाता है।
- वर्तमान में भारत में लोहे का पहला साक्ष्य अतिरंजीखेरा में देखने को मिला है।
- वैदिक समाज के निर्माता आर्य थे।
- आर्य मध्य एशिया (मैक्समूलर) से आए थे और भारत में सप्त सैंधव प्रदेश में (सात नदियों का प्रदेश या पंजाब, हरियाणा) बस गए।
- आर्यों की भाषा संस्कृत थी जो देवताओं की भाषा थी, जिस कारण आर्य स्वयं को श्रेष्ठ कहते थे। जिन्हें संस्कृत नहीं आती थी, अर्थात् भारत में मूल निवासियों को अनार्य या निम्न कहा जाता था।
- दक्षिण भारत का आर्यीकरण अगस्त ऋषि ने किया।

- उत्तर भारत का आर्यीकरण राजा विदेह के पुरोहित (पंडित) गौतम राहुगढ़ ने किया। किन्तु ये गंगा नदी को पार करके पटना नहीं पहुँच पाए जिस कारण अथर्ववेद में पाटलीपुत्र को अछूतों की भूमि कही गई है और यहाँ के गंगा जल को पवित्र नहीं माना गया है।
- इस समय सबसे प्रिय पशु गाय थी। जो समृद्धि का संकेत थी। गाय की हत्या करने पर मृत्युदंड दिया जाता था।
- राजा का मुख्य कार्य गाय के लिए युद्ध करना (गविष्टि) था। उस समय अर्थव्यवस्था का मुख्य आधार कृषि था।
- परूषणी नदी (रावी) के तट पर आर्य तथा अनार्य राजाओं के बीच युद्ध हुआ। इस युद्ध में आर्य विजयी हुए। इस युद्ध को दशराज्ञ का युद्ध भी कहते हैं। इसकी चर्चा ऋग्वेद के 7वें मंडल में है।
- आर्यों के विजयी होने के कारण ही इस क्षेत्र का नाम आर्यावर्त पड़ा। आर्यों में सबसे महान राजा भरत था। जिसके नाम पर आर्यावर्त का नाम भारत रखा गया।

वैदिक काल की वर्ण व्यवस्था

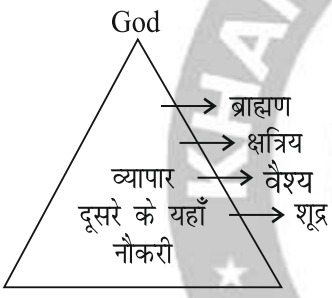

- वैदिक काल में समाज को चार वर्गों में बांटा गया।

1. **ब्राह्मण**- ये पूजा-पाठ तथा शिक्षा-दिक्षा का कार्य करते थे। इनकी संख्या सबसे कम थी।
2. **क्षत्रिय**- ये रक्षा का कार्य करते थे अर्थात् सैनिक होते थे। इनकी संख्या वैश्य से कम थी।
3. **वैश्य (व्यवसाय)**- ये व्यवसाय करते थे। इनकी संख्या शूद्र से कम थी।
4. **शूद्र**- ये दूसरों के यहाँ सेवा करते थे अर्थात् नौकरी करते थे। इनकी संख्या सर्वाधिक थी।

वैदिक काल की सामाजिक जीवन

- वैदिक काल में जीवन को चार आश्रमों (अवस्थाओं) में बांटा गया था।
- जन्म से 5 वर्ष की अवस्था को बाल्यावस्था या शिशु अवस्था कहा गया। इसके बाद जीवन की चार अवस्थाएं प्रारंभ हुई।

➢ **अवस्थाओं की संख्या 4 हैं–**

1. **ब्रह्मचर्य (5-25 वर्ष)** - यह विद्यार्थी अवस्था था। इसमें जंगल में गुरु से शिक्षा ली जाती थी। विद्यार्थी गुरु के साथ ही रहता था।
2. **गृहस्थ जीवन (25-50 वर्ष)**- इसमें विवाह तथा पारिवारिक जीवन का निर्वहन किया जाता था।
3. **वानप्रस्थ (50-75 वर्ष)**- इसमें सामाजिक दायित्वों का निर्वहन किया जाता था।
4. **सन्यासी (75 वर्ष)**- यह 75 वर्ष के बाद की अवस्था थी। इसमें धार्मिक क्रियाकलापों को किया जाता था।

वैदिक काल की नदियाँ

प्राचीन नाम	आधुनिक नाम	प्राचीन नाम	आधुनिक नाम
सिन्धु	इन्डस	कुंभा	काबुल
वितस्ता	झेलम	दृषद्वती	घग्घर
सुवस्तु	स्वात्	परूषणी	रावी
गोमती	गोमल	शतुद्री	सतलज
सदानीरा	गंडक	आस्किनी	चिनाब
विपाशा	व्यास	सुषोमा	सोहन
कुमु	कुर्रम	विपाशा	व्यास

- वैदिक साहित्य में सर्वाधिक चर्चा सिंधु नदी की है क्योंकि यह सबसे महत्वपूर्ण नदी थी।

वैदिक काल के देवता

(i) इन्द्र– यह सबसे महत्वपूर्ण थे। इसकी चर्चा 250 बार हुई है। इन्हें युद्ध तथा वर्षा का देवता कहते हैं। इन्हें पुरंदर भी कहते हैं।

(ii) अग्नि– इसकी चर्चा 200 बार है।

(iii) वरूण– वायु के देवता।

(iv) सोम– जंगल के देवता।

(v) मारूत– तूफान के देवता।

(vi) रौद्र– यह सबसे क्रोध वाले देवता थे। इन्हें पशुओं की देवता कहते हैं।

(vii) विष्णु– संरक्षक एवं पालनकर्ता।

(viii) पुषण– पशुओं का देवता।

➢ **गविष्टि का अर्थ होता है–** गाय के लिए किया गया युद्ध।

➢ **सीता का अर्थ होता है–** हल से जोती गई जमीन पर पड़ा निशान।

वैदिक काल की प्रमुख देवी

(i) ऊषा– प्रभात की देवी

(ii) अरण्यणी– जंगल की देवी

(iii) इला– संकट हरने वाली

(iv) अदिति– सभी देवताओं की देवी

वैदिक काल की सामाजिक व्यवस्था

- इस समय सबसे बड़ा पद राजा का होता था। जिसे जनता चुनती थी। राजा किसी भी निर्णय को लेने से पहले विभिन्न समितियों में बैठकर इसकी चर्चा करता था।

➢ **वैदिक काल में तीन प्रमुख संगठन थी–**

(i) सभा– यह निम्न साधारण लोगों का संगठन था। इसकी चर्चा 8 बार की गई है।

(ii) समिति– यह उच्च वर्ग के लोगों का संगठन था। इसकी चर्चा 9 बार हुई है।

(iii) विद्थ– यह सबसे महत्वपूर्ण संगठन था। इसकी चर्चा 122 बार हुई है।

Note :– सभा तथा विद्थ में भाग लेने की अनुमति महिलाओं को भी थी।

- वैदिक समाज की सबसे छोटी इकाई गाँव थी, जिसके मालिक को ग्रामिक कहते थे।
- सबसे बड़ी इकाई जन होती थी, जिसके मालिक को राजन कहते थे।
- उत्तर वैदिक काल में लोहे की खोज हो जाने के कारण कृषि तथा अर्थव्यवस्था में तेजी से परिवर्तन होने लगा और समाज धीरे-धीरे ग्रामीण सभ्यता से नगरीय सभ्यता की ओर अग्रसर होने लगा। जन का आकार बढ़कर जनपद हो गया और यह जनपद आगे चलकर महाजनपद का रूप ले लिया।
- महाजनपद का काल सिन्धु सभ्यता के बाद दूसरी नगरीय सभ्यता थी।
- भारत में कुल 16 महाजनपद हुए हैं जिसकी चर्चा बौद्ध ग्रंथ अंगुतर निकाय में है।
- 16 महाजनपद में सबसे समृद्ध तथा सबसे शक्तिशाली महाजनपद, मगध था।
- वैदिक काल में कर को बलि कहते थे। जबकि देवताओं को खुश करने के लिए पशु बलि दी जाती थी।

➢ **इस समय घड़ा, मनका, या मृदभांड 4 प्रकार के होते थे–**

1. धूसर मृद्भांड
2. काला मृद्भांड
3. लाल मृद्भांड
4. मिश्रित मृद्भांड

- सर्वाधिक प्रचलन धूसर मृद्भांड का था। जिस पर चित्र बने होते थे, जिसके कारण इसे चित्रित धूसर मृद्भांड भी कहते हैं।
- मिश्रित मृद्भांड लाल एवं काला दोनों का मिश्रण होता था।

➢ **इस समय 3 प्रकार के यज्ञ का प्रचलन था–**

(i) अवश्मेघ यज्ञ– इसमें घोड़ा को यज्ञ करके छोड़ दिया जाता था। जहाँ तक घोड़ा जाता था वहाँ तक का क्षेत्र राजा ले लेता था। घोड़ा को रोकने वाले व्यक्ति को राजा से युद्ध करना पड़ता था।

(ii) वाजपेय यज्ञ– यह राजा के शक्ति प्रदर्शन के लिए होता था। इसमें रथों की रेस लगायी जाती थी।

(iii) राजसूय यज्ञ– राज्याभिषेक के समय इस यज्ञ को किया जाता था।

- उत्तर वैदिक काल में जब अति रंजीखेरी से लोहे की खोज हुई, तो उत्तर वैदिक काल की अर्थव्यवस्था पशुपालन के स्थान से कृषि पर आधारित हो गई।

➢ **वैदिक काल में षष्ठ् दर्शन दिए गए–**

(i) सांख्यदर्शन – कपिल
(ii) न्याय दर्शन – गौतम
(iii) योग दर्शन – पतंजलि
(iv) वैशेषिक दर्शन – कणाद
(v) उतर मिमांसा – वादरायण
(vi) पूर्वी मिमांसा – जैमिनी

Note :– गौतम बुद्ध के अधिकतर उपदेश सांख्यदर्शन से लिए गए हैं।

➢ **सिंधु सभ्यता तथा वैदिक सभ्यता में अंतर–**

सिंधु/हड़प्पा सभ्यता	वैदिक सभ्यता
1. नगरीय थी	ग्रामीण थी
2. मातृ सतात्मक	पितृ सतात्मक
3. प्रमुख पशु बैल	प्रमुख पशु गाय
4. नियोजन	सामाजिक नियोजन
5. युद्ध से परिचित नहीं थे	गाय के लिए युद्ध होता था
6. कांसे की खोज	लोहे की खोज
7. कृषि + व्यापार	कृषि + पशुपालन
8. शिव तथा मातृदेवी की पूजा	इन्द्र महत्वपूर्ण देवता